

11. पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम

-देसराज डोगरा

पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम का जन्म 11 जुलाई, 1882 को हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा की देहरा तहसील के डाडासीबा के समीप पधियाल गांव में पं० लखनूराम के घर हुआ। इन की प्राम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वे दूर-पार जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त न कर सके। छोटे आयु में ही, उस समय के रिवाज के कारण, इन का विवाह सरस्वती नामक कन्या से हुआ। कुछ दिन इक्के-दुक्के काम करने के उपरान्त वे रोजी-रोटी की तलाश में लाहौर चले गए। गाने का शौक बचपन से ही था। शास्त्रीय संगीत में विशेष रुचि होने के कारण उन्होंने कई बार हरिबल्लभ संगीत मेले में भाग लेकर लोकप्रियता प्राप्त की। इन की गायन कला से प्रभावित होकर श्रीमती सरोजनी नायडू ने इन्हे 'बुलबुले-पहाड़ की उपाधि से विभूषित किया। लाहौर रहते हुए इन्हें उस समय के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानियों-लाला हरदयाल, सरदार अजीत सिंह, मौलवी बरकत अली से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिन से इन्हें देश के लिए काम करने की प्रेरणा मिली। वही इन का सम्पर्क सूफी अम्बाप्रासद और लालचंद 'फलक' आदि कवियों से हुआ। यहीं से उन के कवि जीवन की शुरुआत हुई।

सन् 1905 ई० के अप्रैल मास में कांगड़ा में बहुत बड़ा भूकम्प आया, जिस में लाहौर से आकर कांगड़ा में लाला लाजपत राय ने राहत कार्य किया। यहीं से बाबा जी को देश सेवा की प्रेरणा मिली। इन्हीं दिनों जब वे लाहौर में अभी अपने पांव जमा ही रहे थे कि इन पर विपत्तियों का पहाड़ आन पड़ा। सन् 1904 ई० में पिता का और सन् 1905 ई० में माता का देहान्त हो गया। परिणामस्वरूप घर का सारा आर्थिक ढांचा चरमरा गया और इन्हें दिन रात परिश्रम करके घर सम्भालना पड़ा। इन्हीं दिनों इन्होंने कांगड़ा के गांव-गांव में जाकर लोगों को अंग्रेजों के विरुद्ध एक जुट होने का आह्वान किया।

सन् 1911 में वे लार्ड हार्डिंग का दरबार देखने दिल्ली गए। दरबार की तड़क-भड़क देख कर उन्हें गुलामी का और भी आभास हुआ। वहां उन की भेंट रास बिहारी बोस और अमरनाथ सरीखे भक्तों से हुई तथा उन पर देशभक्ति का चोखा रंग चढ़ गया। दिल्ली दरबार से लौट कर उन्होंने पूरे जोर-शोर से राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया।

सन् 1919 में बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग में जनरल डायर ने एक सभा में एकत्रित लोगों पर गोलियां चला कर सैकड़ों को भून डाला। इस घटना का भी बाबा जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी वर्ष इन की पहली गरिप्तारी हुई। 26 जनवरी, 1920 ई० को न्यायालय ने इन्हें दो साल कैद की सजा सुनाई। जेल जीवन की दुर्दशा और व्यथा की छाप इनकी कविताओं में साफ दिखाई देती है। यथा :-

भारत मां है मेरी,
वह जंजीरां जकड़ी है।
वह अंग्रेज़ां पकड़ी है,

कांशी उस जो आज्ञाद कराना है॥

जेल में ही उन्होंने कई कविताएँ लिखी- 'निक्के निक्के माहणुआं जो दुख बड़ा भारी', 'उजड़ी कांगड़ादेस जाणा' देस परमेसरा किहियां बसणा इत्यादि बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

सन् 1922 से सन् 1924 तक कांगड़ा के एक अन्य स्वतन्त्रता सेनानी लाला बाशीराम के साथ उन्होंने ज़िला का दौरा किया तथा लोगों को गुलामी के अभिशाप से अवगत कराया।

पालमपुर में आयोजित एक सभा में कविता-पाठ करते हुए उन्हें बंदी बना लिया गया। कविता इस प्रकार थी :-

फरंगिया दा ढिहगा पर ध्याड़ा अरेऽऽ

एह अज भी गए, एह कल भी गए।

इस प्रकार बाबा जी ग्यारह बार जेल गए और उन्होंने अपनी जवानी के नौ वर्ष मुलतान, धर्मशाला, फिरोजपुर, होशियारपुर, गुजरात, लाहौर आदि जेलों में व्यतीत किये।

बाबा जी अपनी धुन के बहुत पक्के थे। शहीद सम्राट् भगत सिंह, राजगुरु, और सुखदेव को सन् 1931 में फांसी दिये जाने के अवसर पर जो प्रतिज्ञा उन्होंने ली, वह आयु पर्यन्त निर्भाई उस प्रतिज्ञा के अंश इस प्रकार हैं :-

“हम लोग परमात्मा से दुआ मांगते हैं और प्रार्थना करते हैं कि इन नौजवान हस्तियों को बहिश्त (स्वर्ग) नसीब हो और इन के बालदैन (माता-पिता) जिन के ये प्यारे-प्यारे लाडले नाजो-नहमत (प्यार-लाड) से पले हुए सुपुत्र थे, उन सब की आत्माओं को परमात्मा शान्ति दे और आपका यह दास (बाबा कांशीराम) आज से यह प्रण लेता है कि जब तक स्वराज न मिल जाए, मैं अपना लिबास सियाह रखूंगा।”

वे मात्र काले कपड़े ही धारण नहीं करते थे प्रत्युत उनका पैन्, पैंसिल, रूमाल आदि भी काले रंग के ही होते थे। जब उन्हें कोई पूछता:- ‘बाबा जी ये कपड़े कब सफेद होंगे, तो कहते भाई जैसे मेरे बाल सफेद हो गए हैं, एक दिन आएगा भारत स्वतन्त्र होगा और मेरे कपड़े भी सफेद हो जाएंगे।’

सन् 1922 में परागपुर गांव की एक सभा में उन्होंने देखा कि केवल नौ श्रोता उपस्थित थे। उन्होंने उस दिन को अपनी डायरी में लिखा है- ‘ऐसा लगता है कि या तो हम नौ उपस्थित लोग पागल हैं अथवा देहरा तहसील के नब्बे हज़ार ?’ (उस समय देहरा तहसील की जनसंख्या 90,000 ही थी।) फिर उन्होंने कहा, नौ ही जागृत हैं। बाकी के सभी सोए हुए हैं। परन्तु एक दिन आएगा वे सभी जाग उठेंगे। तब यह देश अंग्रेज़ों को छोड़ना पड़ेगा। और उनकी यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।

सन 1937 में गढ़दीवाला (होशियारपुर) में एक राजनैतिक सम्मेलन हुआ, जिस की अध्यक्षता पं० जवाहरलाल नेहरू ने की। वे इन की गतिविधियों और व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि एकदम बोल उठे 'यह छोटे से कद वाला व्यक्ति ऐसा लगता है जैसा पहाड़ी गांधी हो।' तदुपरान्त वे इस उपाधि से पुकारे जाने लगे।

पहाड़ी गांधी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न थे। स्वतन्त्रता सेनानी के साथ-साथ वे उच्च कोटि के साहित्यकार भी थे। उन्होंने कोई 500 कविताएं और लगभग नौ कहानियां लिखीं। उन्होंने अध्यात्मवाद, समाजवाद, अछूत-उद्धार, पहाड़ी रोमांस, पहाड़ी जीवन की कठिनाइयाँ, खान-पान, रहन-सहन आदि को अपनी कविताओं में अनेक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके बारे में कहा जाता है कि नवीन कविताओं में जो प्रयोगवाद है उस का प्रारम्भ बाबा कांशीराम ने वर्षों पूर्व अपनी कविताओं में कर दिया था। पहाड़ी भाषा से उन का अगाध प्रेम था। उन्हें यदि वर्तमान पहाड़ी का साहित्यकार मानें तो अतिशयोक्ति न होगी। उन द्वारा विरचित गीत आज भी कांगड़ा के गांव-गांव में गाए जाते हैं। वे सम्भवतः पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सभाओं में मातृभाषा पहाड़ी में भाषाण देना प्रारम्भ किया था।

संसार में बहुत कम लोग होते हैं जो एक से अधिक विद्याओं के ज्ञाता होने के बावजूद अपनी सारी जिंदगी दुःखों और त्रासद स्थितियों में गुज़ार देते हैं। पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम भी ऐसे लोगों में थे। आमदनी का कोई स्थाई स्रोत न था फिर भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाए और देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से दिन रात चलते ही रहे। इतनी बड़ी साहित्यिक प्रतिभा को पारिवारिक सुख नहीं मिला। अभी वैवाहिक जीवन के नौ वर्ष भी नहीं बीते थे कि उनकी धर्मपत्नी का 1917 ई० में देहांत हो गया। इन के दोनों बेटे ज्ञानचंद और स्वायाराम अभी छोटे ही थे। ज़मीन अंग्रेजी सरकार ने कुर्क कर ली परन्तु इन सब कं बावजूद वे एक योद्धा की तरह स्वतन्त्रता संग्राम में डटे रहे।

15 अक्टूबर, 1943 को बाबा कांशीराम परलोक सिधार गए। पूरा जीवन काले वस्त्र धारण करने वाले बाबा की पुनः सफ़ेद कपड़े पहनने की इच्छा कभी पूरी न हो सकी। इसलिए उनकी अर्धी पर काला कफन डाला गया तथा काले वस्त्र से ही उनका शव लपेटा गया। हिमाचल प्रदेश का यह प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, कवि, गीतकार और स्वनाम धन्य अनुकरणीय प्रेरणा देकर-सदैव के लिए हम से विदा हो गया।

* अभ्यास *

1. बाबा कांशी राम का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. बाबा कांशी राम को 'बुलबुले पहाड़' की उपाधि किस ने दी थी ?
3. पं० जवाहर लाल नेहरू ने बाबा कांशीराम को पहाड़ी गांधी ने नाम से कहाँ पुकारा था ?
4. बाबा कांशी राम ने क्या प्रतिज्ञा ली थी ?
5. बाबा कांशी राम के जीवन और कर्तव्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।